CV Raman Center for Research and Innovation & Vedic Science Centre

School of Management Sciences Lucknow

Hon. (Former) President of India, Shri Pranab Mukherjee is discussing about Air-O-Bike with Prof. Bharat Raj Singh on 10th May 2013 at BBAU, Lucknow

School of Management Sciences Lucknow

लखनऊ My City
अमर उजाला
लखनऊ । सोमवार । 31 मार्च 2014

भूषणानां भूषणं सविनया विद्या।
विनम्रता से युक्त विद्या समस्त आभूषणों का आभूषण है।

आज से नव संवत्सर

ऐसी मान्यता है कि चैत्र शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को ही ब्रह्माजी ने सृष्टि का निर्माण शुरू किया था। हिंदू नव संवत्सर के पहले दिन से शुरू होने वाले चैत्र नवरात्र के दौरान देवी पूजन के अलावा प्रमुख देवी-देवताओं, यक्ष, राक्षसों

प्रतिपदा से ही नववर्ष क्यों?
भारतीय नववर्ष की शुरुआत चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से ही की जाती है, क्योंकि इसी दिन से ग्रह, वारों, महीनों, संवत्सर का शुभारंभ होता है और गणितीय,

उपलब्धि — फर्स्ट कंप्रेस्ड एयर पॉवर्ड बाइक की कैटेगरी में चुना गया

लिम्का बुक में पहुंची हवा से चलने वाली बाइक

अमर उजाला ब्यूरो

लखनऊ। महंगे होते जा रहे पेट्रोल की जगह हवा से चलने वाली बाइक को लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में शामिल कर लिया गया है। राजधानी में बनी इस खास बाइक को मार्च के अंक में लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स ने फर्स्ट कंप्रेस्ड एयर पॉवर्ड बाइक की कैटेगरी में चुना है।

हवा से चलने वाली बाइक को बनाने का कारनामा स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज लखनऊ के प्रो. भरत राज सिंह और एचबीटीआई कानपुर के प्रो. ओंकार सिंह ने किया था। इसको पहली बार राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी के सामने 10 मई 2013 बीबीएयू में प्रदर्शित किया गया। हाल ही में लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स ने मार्च के अपने पब्लिकेशन में इसे जगह दी है। 5.5 एचपी क्षमता के इंजन को कंप्रेस्ड एयर की मदद से टर्बाइन लगाकर चलाया जाता है। 60-90 पीएसआई एयर प्रेशर पर बाइक को 40 मिनट तक चलाया जा सकता है। प्रो. भरत राज सिंह ने बताया कि हवा से चलने वाली बाइक का पेटेंट 13 अप्रैल 2012 को भारत सरकार से मिल चुका है। अब मेरी कोशिश है कि इस बाइक को आम आदमी की पहुंच में लाने के लिए तकनीक को ट्रांसफर कर प्रोडक्शन शुरू किया जाए। इससे लोगों को ईंधन के खर्च से निजात मिल सकेगी।

बीबीएयू में एक प्रदर्शनी के दौरान रखी गई थी हवा से चलने वाली बाइक। *(फाइल फोटो)*

पैसा-पर्यावरण दोनों में फायदा

- ईंधन में कंप्रेस्ड एयर का उपयोग।
- एयर स्टोरेज के लिए लगाए गए सिलेंडर
- कंप्रेस्ड एयर से टर्बाइन को चलाया जाता है, इससे बाइक को गति मिलती है
- बिना लोड के बाइक को 10,000 आरपीएम और लोड के साथ 2-3000 आरपीएम की गति मिलती है
- बाइक जीरो पॉल्यूशन इमीशन फ्यूल सिस्टम पर चलती है
- कंप्रेस्ड एयर सामान्य टायर में भरने वाली हवा से मिल जाती है
- बाइक से पांच रुपये के खर्च में 40 किलोमीटर का माइलेज मिलता है।

Limca
Book of Records

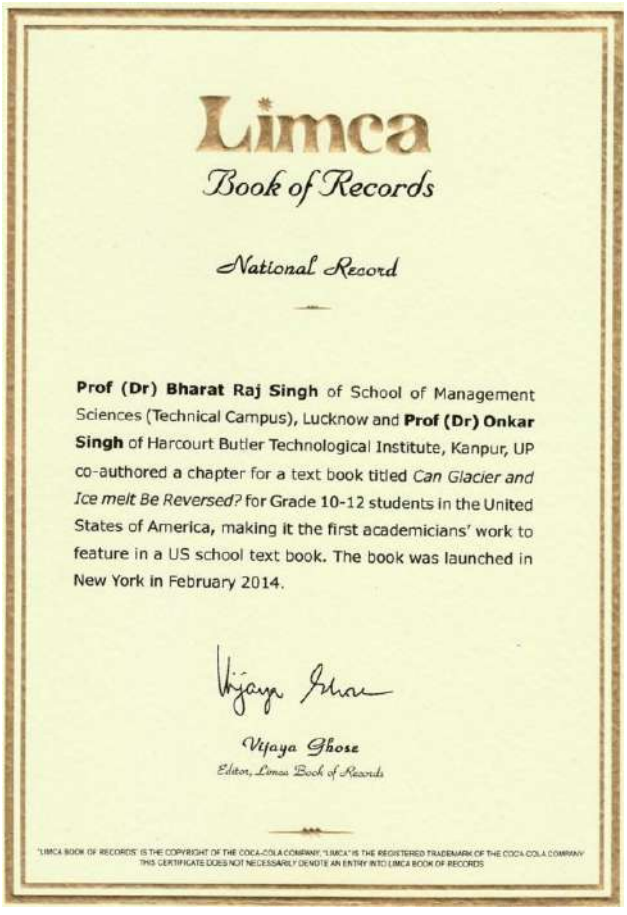

National Record

Prof (Dr) Bharat Raj Singh of School of Management Sciences (Technical Campus), Lucknow and **Prof (Dr) Onkar Singh** of Harcourt Butler Technological Institute, Kanpur, UP co-authored a chapter for a text book titled *Can Glacier and Ice melt Be Reversed?* for Grade 10-12 students in the United States of America, making it the first academicians' work to feature in a US school text book. The book was launched in New York in February 2014.

Vijaya Ghose
Editor, Limca Book of Records

"LIMCA BOOK OF RECORDS" IS THE COPYRIGHT OF THE COCA-COLA COMPANY. "LIMCA" IS THE REGISTERED TRADEMARK OF THE COCA-COLA COMPANY
THIS CERTIFICATE DOES NOT NECESSARILY DENOTE AN ENTRY INTO LIMCA BOOK OF RECORDS

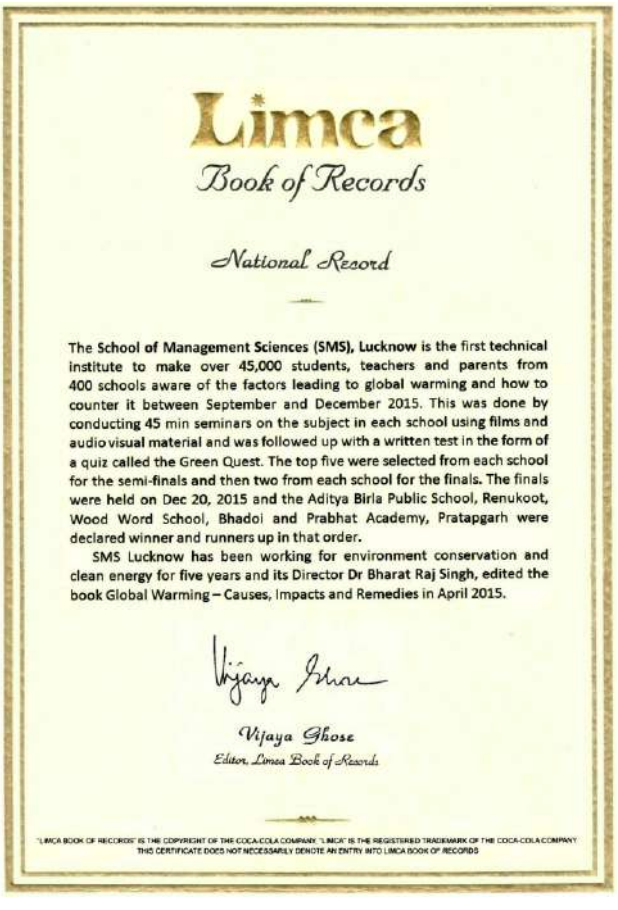

Limca
Book of Records

National Record

The School of Management Sciences (SMS), Lucknow is the first technical institute to make over 45,000 students, teachers and parents from 400 schools aware of the factors leading to global warming and how to counter it between September and December 2015. This was done by conducting 45 min seminars on the subject in each school using films and audio visual material and was followed up with a written test in the form of a quiz called the Green Quest. The top five were selected from each school for the semi-finals and then two from each school for the finals. The finals were held on Dec 20, 2015 and the Aditya Birla Public School, Renukoot, Wood Word School, Bhadoi and Prabhat Academy, Pratapgarh were declared winner and runners up in that order.

SMS Lucknow has been working for environment conservation and clean energy for five years and its Director Dr Bharat Raj Singh, edited the book Global Warming – Causes, Impacts and Remedies in April 2015.

Vijaya Ghose
Editor, Limca Book of Records

"LIMCA BOOK OF RECORDS" IS THE COPYRIGHT OF THE COCA-COLA COMPANY. "LIMCA" IS THE REGISTERED TRADEMARK OF THE COCA-COLA COMPANY
THIS CERTIFICATE DOES NOT NECESSARILY DENOTE AN ENTRY INTO LIMCA BOOK OF RECORDS

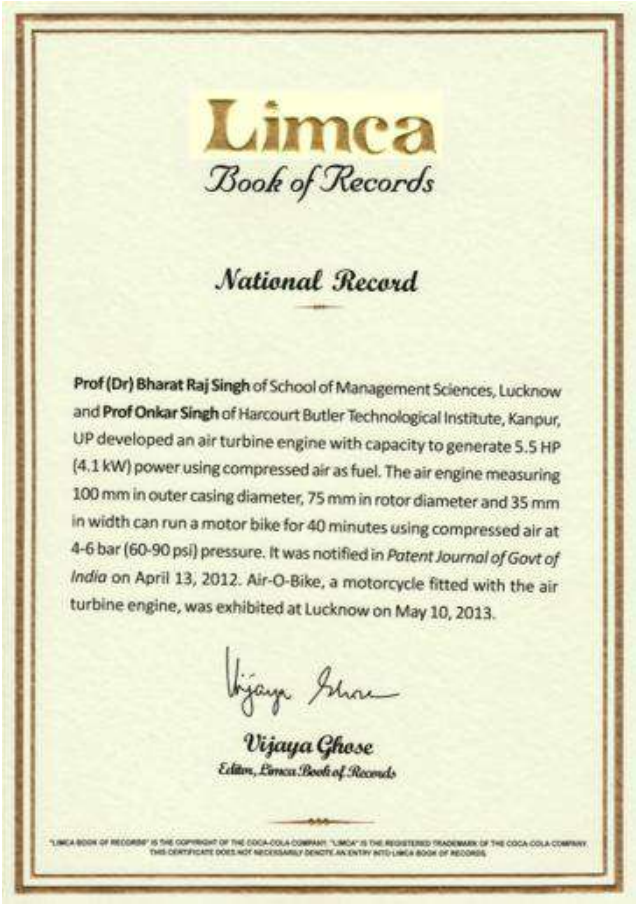

Limca Book of Records

National Record

Prof (Dr) Bharat Raj Singh of School of Management Sciences, Lucknow and **Prof Onkar Singh** of Harcourt Butler Technological Institute, Kanpur, UP developed an air turbine engine with capacity to generate 5.5 HP (4.1 kW) power using compressed air as fuel. The air engine measuring 100 mm in outer casing diameter, 75 mm in rotor diameter and 35 mm in width can run a motor bike for 40 minutes using compressed air at 4-6 bar (60-90 psi) pressure. It was notified in *Patent Journal of Govt of India* on April 13, 2012. Air-O-Bike, a motorcycle fitted with the air turbine engine, was exhibited at Lucknow on May 10, 2013.

Vijaya Ghose
Editor, Limca Book of Records

"LIMCA BOOK OF RECORDS" IS THE COPYRIGHT OF THE COCA-COLA COMPANY. "LIMCA" IS THE REGISTERED TRADEMARK OF THE COCA-COLA COMPANY. THIS CERTIFICATE DOES NOT NECESSARILY DENOTE AN ENTRY INTO LIMCA BOOK OF RECORDS.

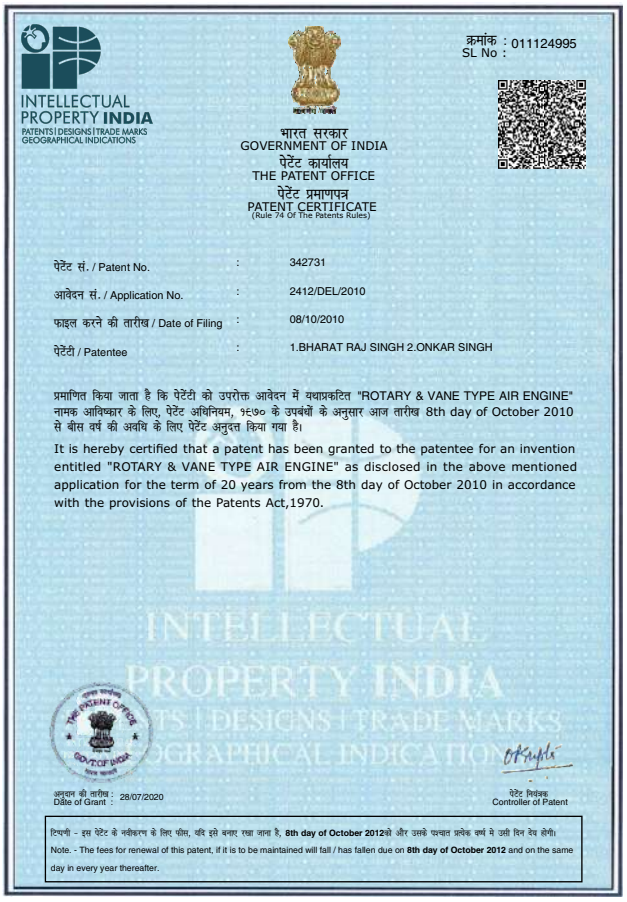

INTELLECTUAL PROPERTY **INDIA**
PATENTS | DESIGNS | TRADE MARKS
GEOGRAPHICAL INDICATIONS

क्रमांक : 011124995
SL No :

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
पेटेंट कार्यालय
THE PATENT OFFICE
पेटेंट प्रमाणपत्र
PATENT CERTIFICATE
(Rule 74 Of The Patents Rules)

पेटेंट सं. / Patent No.	:	342731
आवेदन सं. / Application No.	:	2412/DEL/2010
फाइल करने की तारीख / Date of Filing	:	08/10/2010
पेटेंटी / Patentee	:	1.BHARAT RAJ SINGH 2.ONKAR SINGH

प्रमाणित किया जाता है कि पेटेंटी को उपरोक्त आवेदन में यथाप्रकटित "ROTARY & VANE TYPE AIR ENGINE" नामक आविष्कार के लिए, पेटेंट अधिनियम, १९७० के उपबंधों के अनुसार आज तारीख 8th day of October 2010 से बीस वर्ष की अवधि के लिए पेटेंट अनुदत्त किया गया है।

It is hereby certified that a patent has been granted to the patentee for an invention entitled "ROTARY & VANE TYPE AIR ENGINE" as disclosed in the above mentioned application for the term of 20 years from the 8th day of October 2010 in accordance with the provisions of the Patents Act,1970.

अनुदान की तारीख : 28/07/2020
Date of Grant :

पेटेंट नियंत्रक
Controller of Patent

टिप्पणी - इस पेटेंट के नवीकरण के लिए फीस, यदि इसे बनाए रखा जाना है, **8th day of October 2012**को और उसके पश्चात प्रत्येक वर्ष मे उसी दिन देय होगी।

Note. - The fees for renewal of this patent, if it is to be maintained will fall / has fallen due on **8th day of October 2012** and on the same day in every year thereafter.

लखनऊ LIVE युवा हिन्दुस्तान गुरुवार , 22 जनवरी 2015 20

अमेरिकी छात्र पढ़ेंगे प्रो. भरत का लेख

उपलब्धि

लखनऊ | कार्यालय संवाददाता

शहर के वैज्ञानिक प्रो. डॉ.भरत राज सिंह और प्रो. ओंकार सिंह ने एक नया कीर्तिमान दर्ज किया है। अमेरिकी विद्यालयों में कक्षा 9 से 12 के पाठ्यक्रम में लागू पुस्तक ''कैन ग्लेशियर एण्ड आइसमेल्ट बी रिवर्सड'' में इनके द्वारा लिखित अध्याय को शामिल किया गया है।

सह लेखक के रूप में दोनों पहले भारतीय शिक्षाविद् बने जिनका अध्याय ''द मेल्टिंग ऑफ ग्लेशियर कैन नॉट बी रिवर्सड विद् ग्लोबल वार्मिंग'' अमेरिकी स्कूल पाठ्यक्रम में लागू किया गया।

प्रो. डॉ.भरत राज सिंह

इसके लिए इस पुस्तक को लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड-2015 में शामिल किया गया है। इसका प्रकाशन बुधवार से शुरू किया गया है।

वैज्ञानिक प्रो. (डॉ.) भरत राज सिंह स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेस, लखनऊ के निदेशक है। प्रो. ओंकार सिंह वर्तमान में कुलपति मदन मोहन मालवीय तकनीकी विश्वविद्यालय गोरखपुर की जिम्मेदारी संभाल रहे हैं। शहर के डॉ. भरत राज सिंह इससे पहले भी लिम्का बुक में जगह पा चुके हैं। एयर-ओ-बाइक के अविष्कार के लिए उन्होंने लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड-2014 में प्रथम अविष्कारक के रूप में शामिल किया गया था।

कीर्तिमान

- 9 से 12 कक्षा के पाठ्यक्रम में लागू पुस्तक 'कैन ग्लेशियर एण्ड आइसमेल्ट बी रिवर्सड'
- डॉ.भरत राज सिंह के साथ गोरखपुर के प्रो. ओंकार सिंह ने भी बनाया नया कीर्तिमान

आज देवी सिद्धिदात्री की पूजा
▸04

YOUNG INDIA > YOUNG PAPER
NBT
नवभारत टाइम्स

नई दिल्ली/लखनऊ > शनिवार, 28 मार्च 2015 > चैत्र 7 शक 1937 > चैत्र शुक्ल 9 विक्रम 2072 www.nbt.in पेज 22*> मूल्य सिर्फ 2.50 रु.

6 लखनऊ नवभारत टाइम्स। नई दिल्ली/लखनऊ। शनिवार,28 मार्च 2015 www.lucknow.nbt.in

राजधानी के प्रफेसर का पाठ पढ़ेंगे अमेरिकी छात्र

डॉ. भरत राज सिंह की उपलब्धि लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स के नए संस्करण में शामिल

■ **संवाददाता, लखनऊ :** राजधानी के प्रफेसर का पाठ अमेरिकी छात्र पढ़ेंगे। अमेरिका में 10वीं और 12वीं क्लास में एन्वायरमेंटल स्टडीज में राजधानी के डॉ. भरत राज सिंह की किताब के चैप्टर को पढ़ाया जाएगा। उनकी इस उपलब्धि को लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स ने अपने नए संस्करण में शामिल किया है।

डॉ. भरत राज सिंह एसएमएस इंजीनियरिंग कॉलेज के डॉयरेक्टर हैं। इससे पहले भी वह हाइड्रोजन ईंधन पर आधारित इंजन का निर्माण कर चुके हैं। मदन मोहन मालवीय इंजीनियरिंग यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. ओंकार सिंह के साथ लिखी गई उनकी पुस्तक 'ग्लेशियर व बर्फ पिघलने की प्रक्रिया उल्टी हो सकती है' के कुछ चैप्टर्स को अपने 10वीं और 12वीं के करिकुलम में शामिल किया है। पुस्तक पिछले वर्ष फरवरी में अमेरिकी प्रकाशक ग्रीन हैवेन प्रेस ने एट ईश्यू सिरीज के नाम से प्रकाशित की थी। बीते वर्ष भी डॉ. सिंह को यह उपलब्धि मिली थी। लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स ने किसी एकेडमिशियन के काम को अमेरिकन स्कूल बुक्स शीर्षक से रिकॉर्ड्स में जगह दी है। अपनी उपलब्धि पर डॉ. सिंह ने खुशी जाहिर करते हुए कहा कि यह मेरी नहीं शहर और देश की उपलब्धि है।

वैदिक विज्ञान केन्द्र

रविवासरीय
हिन्दुस्तान
तरक्की को चाहिए नया नजरिया

07 लखनऊ • रविवार • 06 मार्च 2016 हिन्दुस्तान आज का दिन लखनऊ

वैदिक विज्ञान केन्द्र की बैठक में निदेशक ने खोला राज, वेद पुराण और अन्य धर्मग्रंथों में उड़नखटोले का भी जिक्र

ग्रंथों में छिपे तकनीकी ज्ञान का प्रयोग होगा

वैदिक विज्ञान केंद्र

लखनऊ | प्रमुख संवाददाता

ग्रन्थों में छिपे रहस्य और उस समय उपलब्ध तकनीकी ज्ञान को वर्तमान में प्रयोग में लाया जाएगा। इसके लिए स्कूल ऑफ मैनेजमेन्ट साइन्सेज (एसएमएस) का वैदिक विज्ञान केन्द्र लगातार शोध कर रहा है। उससे विद्यार्थियों व शिक्षकों को अवगत कराया जा रहा है। यह बात शनिवार को वैदिक विज्ञान केन्द्र की बैठक बताई गई।

वैदिक ज्ञान केंद्र में बैठक के दौरान प्रो.भरत राज सिंह ने दी जानकारी • हिन्दुस्तान

कॉलेज परिसर में आयोजित बैठक में एसएमएस के निदेशक प्रो. भरत राज सिंह ने बताया कि केन्द्र का उद्देश्य वेद, पुराण, महाभारत, रामायण में उपलब्ध ज्ञान को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से उसके तथ्यों को जन-समूह के सम्मुख प्रस्तुत करना है और शोध को गति देना है। भारत के प्राचीन ग्रंथों में अद्‌भुत बातें छिपी हैं। वेद-पुराण में उड़नखटोले का भी जिक्र है। केन्द्र उन ग्रन्थों की सच्चाई जानने में लगा हुआ है। महर्षि भारद्वाज के वैमानिक शास्त्र की पाण्डुलिप के अवशेष मिले थे। उसका हस्तलिपि पंडित सुब्बराय शास्त्री द्वारा 1916 में तैयार किया गया था। उसमें सिर्फ छह भाग ही प्राप्त हुए थे। अध्यक्ष जीएन सिन्हा ने वैज्ञानिकों से पौराणिक ग्रन्थों में छिपे वैज्ञानिक तथ्यों को दुनिया के सामने लाने की अपील की है।

महाभारत कालीन विमान का नासा में परीक्षण

लखनऊ | राजेन्द्र प्रताप सिंह

पांच हजार वर्ष पहले महाभारत में उपयोग किया गया विमान अफगानिस्तान की एक गुफा में मिला। उस पर अमेरिका नासा के वैज्ञानिकों से डगलास केन्द्र पर परीक्षण करा रहा है।

उस विमान में असीमित ऊर्जा है, जिसको गुफा से निकालने में अमेरिकी सेना के आठ कमांडो पहले ही लापता हो चुके हैं। उस घटना के बाद अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा तीन देशों के राष्ट्राध्यक्षों के साथ खुद विमान को देखने पहुंचे थे।

यह दावा स्कूल आफ मैनेजमेंट साइंसेज (एसएमएस) के निदेशक व वरिष्ठ वैज्ञानिक प्रो. भरत राज सिंह ने किया है।

दावा

- अफगानिस्तान की एक गुफा में विमान की मौजूदगी का पता चलने पर उसे देखने खुद बराक ओबामा व तीन देशों के राष्ट्राध्यक्ष गए थे
- विमान को निकालने में अमेरिकी फौज के आठ कमांडो हो चुके हैं लापता, नासा के सहयोग से अमेरिका ले जाया गया विमान

प्रो. सिंह ने बताया कि ग्रन्थों में छिपे रहस्यों को जानने व उस समय उपलब्ध तकनीकी ज्ञान को वर्तमान में प्रयोग में लाने के लिए स्कूल ऑफ मैनेजमेन्ट साइन्सेज ने गत वर्ष 21 अप्रैल को 'वैदिक विज्ञान केन्द्र' की स्थापना हुई थी। गत वर्ष जून में केन्द्र ने इस घटना को संकलित किया था।

अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने अफगानिस्तान की गुप्त यात्रा की। उन्होंने तीन महाराष्ट्राध्यक्षों को भी जनवरी 2013 में देखने के लिए आमंत्रित किया था।

यह सूचना अमेरिकी सैनिकों के रहस्योद्‌घाटन से अमेरिकी वेबसाइट ancient aliens disclose.tv पर डाली गई थी, जिसका वीडियो बाद में हटा दिया गया है, लेकिन उनके सैनिकों के बातचीत का आडियो अभी भी मौजूद है।

हिन्दुस्तान
तरक्की को चाहिए नया नजरिया

शुक्रवार, 25 मार्च 2016, वाराणसी, पांच प्रदेश, 18 संस्करण, बलिया www.livehindustan.com वर्ष 7, अंक 71, पेज 16, मूल्य ₹4.00, चैत्र, कृष्ण

वैज्ञानिकों का दावा, अहिरावण का पाताललोक अमेरिकी महाद्वीप में

लखनऊ | राजेन्द्र प्रताप सिंह

वैज्ञानिकों ने उस स्थान को खोज निकालने का दावा किया है जिसका वर्णन रामायण में पाताललोक के रूप में है। हनुमानजी ने यहीं से भगवान राम व लक्ष्मण को पातालपुरी के राजा अहिरावण के चंगुल से मुक्त कराया था। यह स्थान मध्य अमेरिकी महाद्वीप में पूर्वोत्तर हॉंडुरास के जंगलों के नीचे दफन है। अमेरिकी वैज्ञानिकों ने लाइडर तकनीकी से इस स्थान का 3-डी नक्शा तैयार किया है, जिसमें जमीन की गहराइयों में गदा जैसा हथियार लिए वानर देवता की मूर्ति की पुष्टि हुई है।

1940 में हुई थी जानकारी : अमेरिकी वैज्ञानिकों की इस खोज की पुष्टि एसएमएस (स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज) के निदेशक व वैदिक विज्ञान केन्द्र के प्रभारी प्रो. भरत राज सिंह ने की है। उन्होंने बताया कि प्रथम विश्वयुद्ध के बाद एक अमेरिकी पायलट ने हॉंडुरास के जंगलों में कुछ अवशेष देखे थे। उसकी पहली जानकारी अमेरिकी खोजकर्ता थियोडोर मोर्ड ने 1940 में दी थी। एक अमेरिकी पत्रिका में उसने उस प्राचीन शहर में वानर देवता की पूजा होने की बात भी लिखी थी, लेकिन उसने जगह का खुलासा नहीं किया था। बाद में रहस्यमय तरीके से थियोडोर की मौत हो गई और जगह का रहस्य बरकरार रहा।

प्राचीन शहर में वानर पूजा पेज 13

प्रो. भरत राज सिंह

- अमेरिका के जंगलों में दफन है प्राचीन शहर, वानरों की मूर्तियां मिलीं
- वैज्ञानिकों ने लाइडर तकनीक से तैयार किया 3-डी नक्शा

1940 में पहली बार अमेरिकी खोजकर्ता थियोडोर मोर्ड ने देखे थे अवशेष

लाइडर तकनीक से खोजा

करीब 70 साल बाद अमेरिका की ह्यूस्टन यूनिवर्सिटी व नेशनल सेंटर फार एयरबोर्न लेजर मैपिंग के वैज्ञानिकों ने होंडुरास के घने जंगलों में मस्कीटिया नामक स्थान पर लाइडर नामक तकनीकी से जमीन के नीचे 3-डी मैपिंग की, जिसमें प्राचीन शहर का पता चला। इसमें जंगल के ऊपर से विमान से अरबों लेजर तरंगें जमीन पर फेंकी गईं। इससे 3-डी डिजिटल नक्शा तैयार हो गया। 3-डी नक्शे में जमीन के नीचे गहराइयों में मानव निर्मित कई वस्तुएं दिखाई दीं। इसमें हाथ में गदा जैसा हथियार लिए घुटनों के बल बैठी हुई है वानर मूर्ति भी दिखी है।

होंडुरास के जंगलों में दिखे विलुप्त विरासत के सबूत

अमेरिका में खोजकर्ताओं को 3-डी मैपिंग के जरिए प्राचीन शहर और जमीन के नीचे गहराइयों में मानव निर्मित कई मूर्तियां दिखीं।

इतिहासकार भी मानते हैं प्राचीन शहर में वानर पूजा

लखनऊ। वैज्ञानिकों ने उस स्थान को खोज निकालने का दावा किया है जिसका वर्णन रामायण में पाताललोक के रूप में है। अमेरिकी इतिहासकार भी मानते हैं कि पूर्वोत्तर हॉंडुरास के घने जंगलों के बीच मस्कीटिया नाम के इलाके में हजारों साल पहले एक गुप्त शहर सियूदाद ब्लांका का वजूद था। वहां के लोग एक विशालकाय वानर मूर्ति की पूजा करते थे।

प्रो. भरत राज सिंह ने बताया कि बंगाली रामायण में पाताल लोक की दूरी 1000 योजन बताई गई है, जो लगभग 12,800 किलोमीटर है। यह दूरी सुरंग के माध्यम से भारत व श्रीलंका की दूरी के बराबर है। रामायण में वर्णन है कि अहिरावण के चंगुल से भगवान राम व लक्ष्मण को छुड़ाने के लिए बजरंगबली को पातालपुरी के रक्षक मकरध्वज को परास्त करना पड़ा था। मकरध्वज बजरंगबली के ही पुत्र थे, लिहाजा उनका स्वरूप बजरंगबली जैसा ही था। अहिरावण के वध के बाद भगवान राम ने मकरध्वज को ही पातालपुरी का राजा बना दिया था। जमीन के नीचे वानर मूर्ति मिलने के बाद अनुमान लगाया जा सकता है कि बाद में लोग मकरध्वज की ही मूर्ति की पूजा करने लगे होंगे।

हिन्दुस्तान
तरक्की को चाहिए नया नजरिया
बुधवार, 13 अप्रैल 2016, लखनऊ, पांच प्रदेश, 18 संस्करण, नगर संस्करण | www.livehindustan.com | वर्ष 21, अंक 87, 26 पेज, मूल्य ₹ 4.00
हिन्दुस्तान लखनऊ LIVE

युवा

प्रवेश सलाहकार समिति का फैसला, लखनऊ की प्रवेश परीक्षा 30 मई से

कॅरियर

आप बना सकते हैं डायग्नोस्टिक मेडिकल सोनोग्राफी में बेहतरीन कॅरियर

एंटरटेनमेंट

प्रियंका चोपड़ा की बात विशाखा को हजम नहीं हुई, बिफ्स कुछ नाराज सी है

स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के निदेशक प्रो. भरत राज सिंह कर रहे ग्रंथ व पुराणों में दर्ज तथ्यों पर शोध

पृथ्वी से सूर्य की दूरी बताती है रुद्राक्ष की माला

लखनऊ | रामेन्द्र प्रताप सिंह

रुद्राक्ष या तुलसी की माला में 108 मनिकाओं का विशेष महत्व है। सूर्य व चंद्रमा के व्यास में 108 का गुणा करने पर दोनों की पृथ्वी से वास्तविक दूरी का पता चलता है। इसे सिद्ध किया है स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज (एसएमएस) के निदेशक प्रो. भरत राज सिंह ने।

वह वैदिक विज्ञान केन्द्र के माध्यम से ग्रंथ व पुराणों में दर्ज तथ्यों पर शोध कर रहे हैं और उसके वैज्ञानिक कारण खोज रहे हैं। प्रो. सिंह ने बताया कि हिन्दू धर्म में पूजा के दौरान रुद्राक्ष या तुलसी की 108 मनिकाओं वाली माला का इस्तेमाल किया जाता है। सूर्य का व्यास 13,92,684 किलोमीटर है।

प्रो. भरत राज सिंह

इसमें 108 का गुणा करने पर 150409872 किलोमीटर दूरी आती है। यह दूरी पृथ्वी से सूर्य की है, जो अब तक के रिकार्ड के मुताबिक लगभग 14,96,00,000 किलोमीटर आंकी गई है। ऐसी मान्यता है कि रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के नेत्रों से निकले जलबिंदुओं से हुई है। रुद्राक्ष से सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त होती है।

सूर्य के व्यास में 108 का गुणा करने पर निकलती है सूर्य से पृथ्वी की दूरी

चन्द्रमा की पृथ्वी से दूरी भी व्यास में 108 का गुणा पर निकलती है

मान्यता है कि रुद्राक्ष की उत्पत्ति शिव के नेत्रों से निकले जलबिंदुओं से हुई

चंद्रमा से पृथ्वी की दूरी भी साबित

दूसरा प्रमुख ग्रह चंद्रमा है। उसका व्यास 3,474 किलोमीटर है। इसमें 108 का गुणा करने पर दूरी 3,75,392 किलोमीटर आती है। रिकॉर्ड के मुताबिक पृथ्वी से चन्द्रमा की दूरी 3,70,300 किलोमीटर है। मान्यता है कि चन्द्रमा शीतलता व स्वास्थ्य प्रदान करता है। तुलसी भी स्वास्थ्य के लिए बहुत ही लाभदायक है। इसीलिए सुख व शांति के लिए तुलसी की माला से जप करना लाभकारी माना जाता है। उन्होंने कहा कि सूर्य व चन्द्रमा के अलावा किसी अन्य ग्रह की दूरी की जानकारी 108 से नहीं होती। पुराणों में 108 का और भी महत्व है। हमारी आकाशगंगा में 108 मुख्य तारे हैं। इसके अलावा नौ ग्रह व 12 राशियां होती है। हर ग्रह पर राशियों को असर होता है। नौ को 12 से गुणा करने पर 108 आता है। प्रो. भरतराज सिंह ने बताया कि वेद व पुराण में दर्ज बातों का वैज्ञानिक आधार तलाशने के लिए वैदिक विज्ञान केन्द्र का गठन किया गया है। केन्द्र में कई वैज्ञानिक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। देश व विदेशों का भ्रमण कर साक्ष्यों को जुटाया जा रहा है।

108 का अन्य महत्व

माला में 108 मनिकाओं का विशेष महत्व है। कुल 27 नक्षत्र होते हैं। हर नक्षत्र चार चरण का होता है। 27 को चार से गुणा करने पर 108 की संख्या आती है। हर नक्षत्र के प्रत्येक चरण पर जप का प्रावधान है।
प्रशांत तिवारी, ज्योतिषाचार्य।

सरिता प्रवाह ब्यूरो | saritapravah14@gmail.com
लखनऊ, मंगलवार 26 जुलाई, 2016
आप और संसार | www.saritapravah.com | 12

सावन महीने में औरते भगवान शिव की ही पूजा क्यों करती हैं ?

शास्त्रों में कहा गया है कि सावन का महीना भगवान शिव का महीना होता है, क्योंकि ऐसी मान्यता है कि इस महीने में भगवान विष्णु पाताल लोक में रहते हैं, इसी वजह से इस महीने में भगवान शिव ही पालनकर्ता होते हैं और वहीं भगवान विष्णु के भी कामों को देखते हैं, यानि सावन के महीने में त्रिदेवों की सारी शक्तियां भगवान शिव के पास ही होती है।

शिव को देवों का देव महादेव कहा जाता है। वेदों में इन्हें रुद्र नाम से पुकारा गया है। अब आपको कुछ ऐसे काम बताते है, जिन्हें सावन में करने से भगवान शिव प्रसन्न हो जाते हैं -

- सावन के महीने में शिवलिंग की पूजा की जाती है लिंग सृष्टि का आधार है और शिव विश्व कल्याण के देवता है।
- शिवलिंग से दक्षिण दिशा में ही बैठकर पूजन करने से मनोकामना पूर्ण होती है।
- शिवलिंग पूजा में दक्षिण दिशा में बैठकर करके साथ में भक्त को भस्म का त्रिपुण्ड लगाना चाहिए, रुद्राक्ष की माला पहननी चाहिए और बिना कटे-फटे हुये बिल्वपत्र अर्पित करना चाहिए।
- शिवलिंग की कभी पूरी परिक्रमा नहीं करनी चाहिए। आधी परिक्रमा करना ही शुभ होता है।

आइये निदेशक स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज, लखनऊ व वैदिक विज्ञान केंद्र के प्रभारी डा० भरत राज सिंह से हुयी वैज्ञानिक पहलू पर आधारित चर्चा की जानकारी से अवगत करायें-

डा० भरत सिंह का कहना है कि शिव ब्रह्माण्ड की शक्ति के द्योतक है। शिव लिंग काले पत्थर का ही होता है, जो वातावरण व ब्रह्माण्ड से ऊर्जा अवशोषित करता रहता है। इस ऊर्जा को पूर्ण रूप से शिवलिंग में समाहित करने के लिए, इसको साफ सुथरा रखने व जल, दूध आदि से अभिषेक करने की प्रथा है, जिससे पूजा अर्चना के समय आप को उपयुक्त ऊर्जा प्राप्त हो और प्रदूषित ऊर्जा समाप्त हो जाए।

सावन का महीना ऐसा होता है जब बरसात के मौसम का एक माह से ज्यादा समय गुजर चुका होता है, उसके बाद मौसम में नमी व काफी सुहावनापन आ जाता है। बरसात के मौसम में शुरु के एक महीने में वातावरण में मौजूद विषाक्त गैसे धरती पर पानी के कणों के साथ आ जाती हैं और अक्सर स्त्रियों व बच्चों में त्वचा सम्बन्धी रोग उत्पन्न हो जाते हैं। इन रोगों को दूर करने हेतु ही सावन में औरतो द्वारा शिवलिंग पर अभिषेक (जल, दूध, घी, शहद आदि) से किया जाता है जिससे त्वचा रोग के जर्म भी शिव लिंग में अवशोषित होकर उनके शरीर के बैक्टेरिया भी समाप्त हो जाते है और औरते निरोगी हो जाती है तथा शिवलिंग से अच्छी ऊर्जा ग्रहण करती है।

- सावन के महीने में शिव-पार्वती की पूजा-अर्चना से दांपत्य जीवन में प्रेम और तालमेल बढ़ता है।
- सावन माह में सम्पूर्ण वातावरण में पेड़-पौधों, खेतो, झाड़ियो व घासें व आदि में हरियाली आ जाती है, जिससे मनुष्यमात्र ही नहीं वरन जीव-जंतुओं में भी प्रसन्नता बढ़ती है।
- सावन माह में औरते समूह में झूला भी झूलती है और आपस में गायन करती है, जिससे उनमे प्रसन्नता बढ़ती है।

शास्त्रों में अंकित है सावन के महीने में शिवलिंग की पूजा इसलिए की जाती है यह लिंग सृष्टि का आधार है और औरतो द्वारा इस माह में किया गया गर्भ धारण अत्यंत प्रभावशाली व व्यक्तित्व का धनी होना पाया गया है, क्योंकि शिव विश्व कल्याण के देवता है।

रामायण का पाताल लोक : वैज्ञानिकों ने सुलझाई धार्मिक पहेली

अमेरिका में मिला बजरंगबली का पाताल लोक

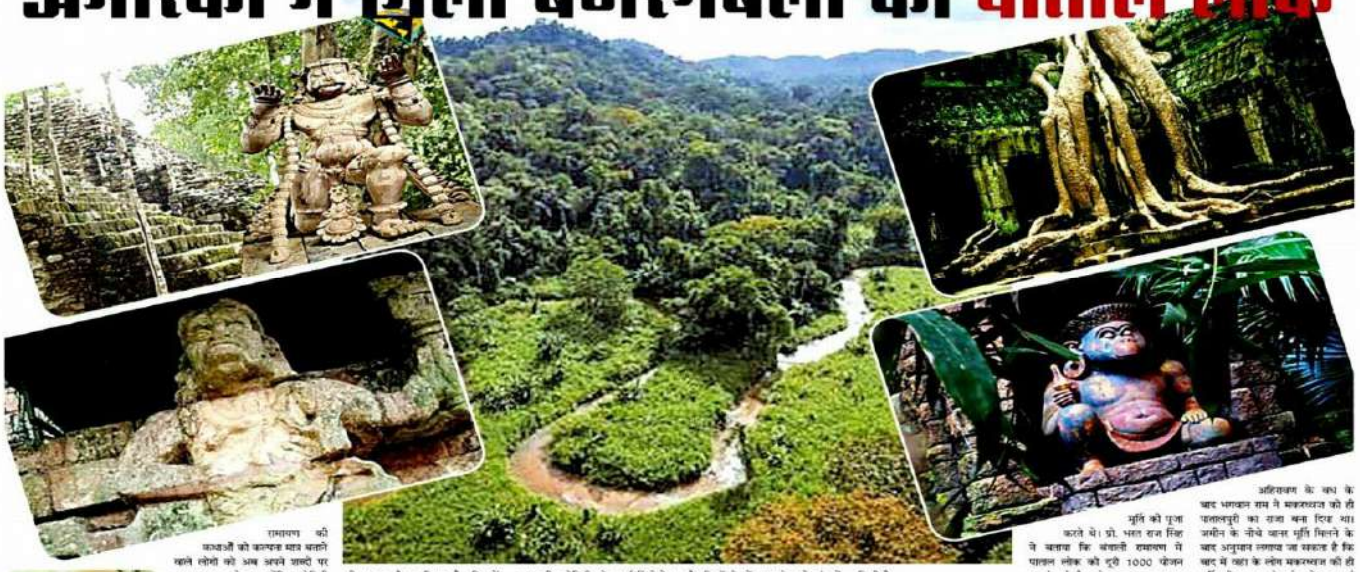

प्रो. भरत राज सिंह

रामायण की कथाओं को कल्पना मात्र बताने वाले लोगों को अब अपने शब्दों पर लगाम लगाना होगा। क्योंकि अमेरिकी वैज्ञानिकों ने उस स्थान को खोज निकाला का है जिसका उल्लेख रामायण में पाताल लोक के रूप में है। कहा जाता है कि हनुमानजी ने यहीं से भगवान राम व लक्ष्मण को पातालपुरी के राजा अहिरावण के चंगुल से मुक्त कराया था।

ये स्थान मध्य अमेरिकी महाद्वीप में पूर्वोत्तर होंडुरास के जंगलों के नीचे दफन है। अमेरिकी वैज्ञानिकों ने लाइडर तकनीकी से इस स्थान का 3-डी नक्शा तैयार किया है, जिसमें जमीन की गहराइयों में गदा जैसा हथियार लिये वानर देवता की मूर्ति होने की पुष्टि हुई है।

स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के निदेशक और वैदिक विज्ञान केन्द्र के प्रभारी प्रो. भरत राज सिंह ने बताया है कि पहले विश्व युद्ध के बाद एक अमेरिकी पायलट ने होंडुरास के जंगलों में कुछ अवशेष देखे थे। अमेरिकी पत्रिका 'डेली टाइम्स गजट' के मुताबिक इस शहर की पहली जानकारी अमेरिकी खोजकर्ता थियोडोर मोर्ड ने 1940 में दी थी। एक अमेरिकी पत्रिका में उसने उस प्राचीन शहर में वानर देवता की पूजा होने की बात भी लिखी थी, लेकिन उसने जगह का खुलासा नहीं किया था। बाद में रहस्यमय तरीके से थियोडोर की मौत हो गई और जगह का रहस्य बरकरार रहा।

करीब 70 साल बाद अमेरिका की ह्यूस्टन यूनिवर्सिटी व नेशनल सेंटर फार एयरबोर्न लेजर मैपिंग के वैज्ञानिकों ने होंडुरास के घने जंगलों में मस्कीटिया नामक स्थान पर लाइडार नामक तकनीक से जमीन के नीचे 3-डी मैपिंग की, जिसमें प्राचीन शहर का पता चला। इसमें जंगल के ऊपर से विमान से अरबों लेजर तरंगें जमीन पर फेंकी गईं। इससे 3-डी डिजिटल नक्शा तैयार हो गया। 3-डी नक्शे में जमीन के नीचे गहराइयों में मानव निर्मित कई वस्तुएं दिखाई दीं। इसमें हाथ में गदा जैसा हथियार लिए घुटनों के बल बैठी हुई है वानर मूर्ति भी दिखी है।

होंडुरास के जंगल की खुदाई पर प्रतिबंध के कारण इस स्थान की वास्तविक स्थिति का पता लग पाना मुश्किल है। होंडुरास सरकार ने इस की पुख्ता जानकारी के लिए आदेश जारी किये हैं। अमेरिकी इतिहासकार भी मानते हैं कि पूर्वोत्तर होंडुरास के घने जंगलों के बीच मस्कीटिया नाम के इलाके में हजारों साल पहले एक गुप्त शहर सियुदाद ब्लांका का वजूद था। यहां के लोग एक विशालकाय वानर मूर्ति की पूजा करते थे। प्रो. भरत राज सिंह ने बताया कि बंगाली रामायण में पाताल लोक की दूरी 1000 योजन बताई गई है, जो लगभग 12,800 किलोमीटर है। यह दूरी भारत अथवा श्रीलंका से खोदी जाने वाली सुरंग जो पृथ्वी के व्यास 12,756 किलोमीटर के बराबर आती है।

रामायण में वर्णन है कि अहिरावण के चंगुल से भगवान राम व लक्ष्मण को छुड़ाने के लिए बजरंगबली को पातालपुरी के रक्षक मकरध्वज को परास्त करना पड़ा था। मकरध्वज बजरंगबली के ही पुत्र थे, लिहाजा उनका स्वरूप बजरंगबली जैसा ही था। अहिरावण के वध के बाद भगवान राम ने मकरध्वज को ही पातालपुरी का राजा बना दिया था। जमीन के नीचे वानर मूर्ति मिलने के बाद अनुमान लगाया जा सकता है कि बाद में वहां के लोग मकरध्वज की ही मूर्ति की पूजा करने लगे, जो भारतवर्ष में हनुमान जी के औरस पुत्र थे।

प्रो. भरत राज सिंह का यह भी मानना है कि हम सभी भारतीयों को गर्व करना चाहिए कि हमारे पौराणिक ग्रन्थ, जैसे रामायण, महाभारत, वेद व पुराण आदि प्राचीन इतिहास की एक धरोहर है, न कि एक काल्पनिक पुस्तकीय लेख। जो भारत वर्ष की प्राचीन सभ्यता और वैज्ञानिक प्रगति को विश्वपटल पर एक पथ प्रदर्शक होने का प्रमाण प्रस्तुत करती है।

रविवासरीय
हिन्दुस्तान
तरक्की को चाहिए नया नजरिया

डेंगू ने दो और को जकड़ा, एक को स्वाइन फ्लू पेज 04 ■ साइबर अपराधियों के निशाने पर फौजियों के बैंक खाते पेज 10

रविवार, 23 जुलाई 2017, लखनऊ, पांच प्रदेश, 20 संस्करण, नगर संस्करण www.livehindustan.com

पर्यावरण वैज्ञानिक प्रो. भरत राज सिंह ने अपनी पुस्तक में आइसबर्ग के टूटने का किया था जिक्र

लखनऊ के वैज्ञानिक ने जताई थी आशंका, टूटेगा ग्लेशियर

लखनऊ | प्रमुख संवाददाता

दक्षिणी ध्रुव के पश्चिमी छोर से 5800 वर्ग किलोमीटर आइसबर्ग टूटने की घटना का अनुमान लखनऊ के पर्यावरण वैज्ञानिक प्रो. भरत राज सिंह ने दो वर्ष पहले ही लगा लिया था। उन्होंने इसका जिक्र अपनी पुस्तक 'ग्लोबल वार्मिंग-काजेज, इम्पैक्ट एंड रेमेडीज' में भी किया है जो अप्रैल 2015 में क्रोशिया में प्रकाशित हो चुकी है।

वैदिक विज्ञान केन्द्र के अध्यक्ष प्रो. सिंह ने पुस्तक में उल्लेख किया है कि अंटार्टिका (दक्षिणी ध्रुव) के पाईन-आइसबर्ग के पश्चिमी क्षेत्र से एक विशाल दरार नासा के सेटलाइट के चित्र से देखी गयी है। इसके टूटने का खतरा है। इससे समुद्र के किनारे बसे पश्चिमी देशों पर खतरा ज्यादा है। हालांकि नासा के वैज्ञानिकों का मत था कि इस प्रकार की दरारें बर्फ के पुनर्जमाव से भर जाती हैं लेकिन

पर्यावरण वैज्ञानिक प्रो. भरत राज सिंह • हिन्दुस्तान

प्रो. भरत राज सिंह ने दो वर्ष पहले ही अपनी पुस्तक 'ग्लोबल वार्मिंग-काजेज, इम्पैक्ट एंड रेमेडीज' में आइसबर्ग के टूटने का जिक्र किया था।

उन्होंने अपनी पुस्तक के पृष्ठ संख्या 16 में लिखा है कि जिस रफ्तार से बर्फ पिघल रही है उससे कुछ वर्षों में ऐसे स्थानों के ग्लेशियर इतिहास में कहानी का भाग बन जाएंगे। ग्लेशियर में जहां दरारें पड़ चुकी हैं, टूटना निश्चित है। इसे रोक पाना अब संभव नहीं है।

ग्लेशियर का जो हिस्सा टूटकर अलग हुआ है उसका क्षेत्रफल गोआ से डेढ़ गुना, दिल्ली शहर से 4 गुना व अमेरिका के न्यूयॉर्क से 7-गुना के बराबर है। उसकी अनुमानित मोटाई 350 मीटर है।

लगभग एक खरब टन वजन वाले आइसबर्ग की समुद्र में चलने की रफ्तार लगभग 325 किलोमीटर प्रतिघंटे की आंकी गयी है। इससे यह भी अनुमान लगाया जा रहा है कि यदि इस चट्टान की बर्फ पूरी तरह पिघलने पर समुद्र के जलस्तर में लगभग 10 इंच की बढ़ोत्तरी हो जाएगी। यह भी अनुमान लगाया जा रहा है कि इससे समुद्री जहाजो के रास्ते में टकराने का भी खतरा बना हुआ है। इसके साथ ही छोटे द्वीपों के डूबने से भी इंकार नहीं किया जा सकता है।

hindustantimes
hindustantimes.com
MONDAY, JULY 31, 2017

LALU URGES SHARAD YADAV TO LEAD FIGHT AGAINST NITISH KUMAR »htnation p8

CHANDIGARH TEEN MAKES IT BIG AT GOOGLE »htnation p6

RBI LIKELY TO CUT REPO RATE
ECONOMISTS SAY DECISION LIKELY ON AUGUST 2 »htbusiness p13

htlucknow

weathertoday
FORECAST: Partly cloudy with spells of rain
HIGH 32.6° C | LOW 26.5° C

ENVIRONMENT HAZARD

Lucknow scientist had predicted breaking of Antarctica iceberg in 2014

HT Correspondent
lkoreporterdesk@hindustantimes.com

LUCKNOW: One of the biggest icebergs broke away from Antarctica recently. The one-trillion tonne iceberg, measuring 5,800 square km, which is equal to four times the area of Delhi, calved away from the Larsen C Ice Shelf in Antarctica.

However, way back in 2014, a renowned scientist and environmentalist, Prof Bharat Raj Singh, director general (technical), School of Management Sciences, Lucknow had seen a wide and deep crack in the image captured by NASA satellite at western Pine Iceberg of Antarctica and had estimated its breaking and the impending dangers.

It was also stated in his book "Global Warming: Causes, Impacts and Remedies" published at INTECH publication, Rijeka, Croatia in April 2015 edition. But, scientists asserted that with the deposition of ice over this area, the crevice can be refilled and toned.

He stated this disaster can lead to submerging of the nearby islands along with the extinction of innumerous faunas in and around. He also asserts that this phenomenon would lead to dearth and extinguish all developmental activities and facilities of us.

Prof Singh adds it is a direct consequence of the negligent exploitation of the earth's natural resources-minerals, oil, coal, to name a few.

An un-estimated augmentation in the population score and uneven or unparallel development around us every minute is also because of this. Sweeping off the woods, loads of vehicles, sprawling of industries are adding tremendously to the wear and tear of the nature around us making direct increase in the global temperature.

The iceberg is likely to be named A68, was already floating before it broke away so there is no immediate impact on sea levels, but the calving has left the Larsen C ice shelf reduced in area by more than 12%.

The Larsen A and B ice shelves, which were situated further north on the Antarctic Peninsula, collapsed in 1995 and 2002 respectively.

Scientists estimate that if this mammoth sized iceberg's ice thaws, the sea level could have an alarming rise of about 10 inches. Moreover, this would be a grave havoc for the routing ships and submerging of the islands in its vicinity.

What is more to account is its area which is one and a half times bigger than Goa, four times the area of New Delhi and seven times that of New York.

The position will now become bad to worst not only due to rise in sea level but will have ill effect of drowning of coastal area but hat have greater impact on vaporization which may lead to storm and excessive rain fall in coming 2-3 months.

इन्दिरा गांधी प्रतिष्ठान में प्राविधिक शिक्षा के बढ़ते कदम के अन्तर्गत विभिन्न तकनीकी विद्यालयों द्वारा लगायी नवाचार प्रदर्शनी में एस.एम.एस. के महानिदेशक (तकनीकी) डॉ. भरतराज सिंह द्वारा उनके विद्यार्थियों द्वारा तैयार किये गये प्रोजेक्ट के विषय में दिनांक 08 अगस्त 2017 को माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्य नाथ से चर्चा करते हुए।

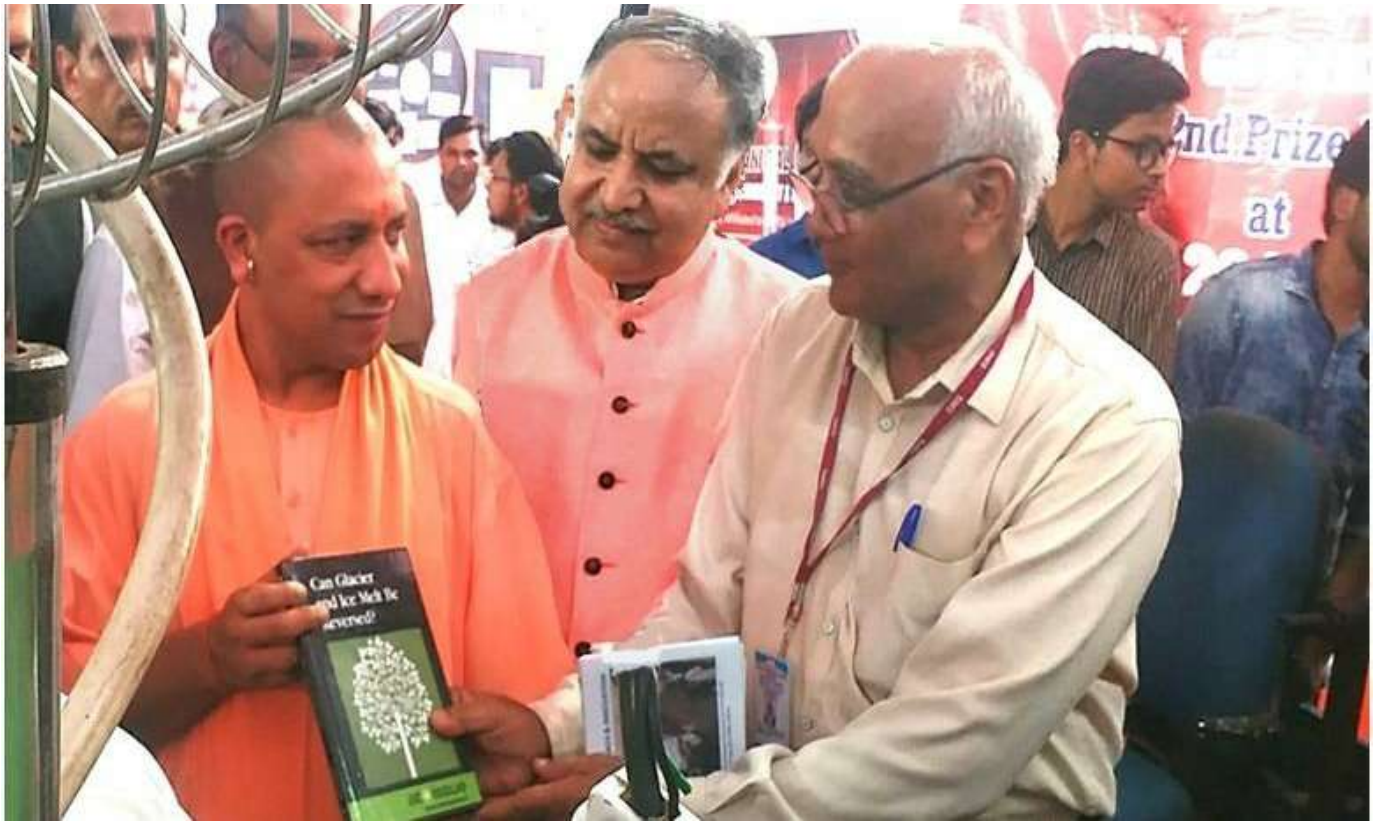

इन्दिरा गांधी प्रतिष्ठान में प्राविधिक शिक्षा के बढ़ते कदम के अन्तर्गत विभिन्न तकनीकी विद्यालयों द्वारा लगायी नवाचार प्रदर्शनी में एस.एम.एस. के महानिदेशक (तकनीकी) द्वारा अमेरिका के हाईस्कूल में उनके अध्याययुक्त पुस्तक, दिनांक 08 अगस्त 2017 को माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्य नाथ को भेंट करते हुए।

इन्दिरा गांधी प्रतिष्ठान में प्राविधिक शिक्षा के बढ़ते कदम के अन्तर्गत विभिन्न तकनीकी विद्यालयों द्वारा लगायी नवाचार प्रदर्शनी में एस.एम.एस. के महानिदेशक (तकनीकी) द्वारा अमेरिका के हाईस्कूल में उनके अध्याययुक्त पुस्तक, दिनांक 08 अगस्त 2017 को माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्य नाथ को भेंट करते हुए।

इन्दिरा गांधी प्रतिष्ठान में प्राविधिक शिक्षा के बढ़ते कदम के अन्तर्गत विभिन्न तकनीकी विद्यालयों द्वारा लगायी नवाचार प्रदर्शनी में एस.एम.एस. के विद्यार्थियों द्वारा तैयार किये गये प्रोजेक्ट का दिनांक 08 अगस्त 2017 को निरीक्षण करते हुए माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्य नाथ, उप मुख्यमंत्रीद्वय श्री केशव प्रसाद मौर्या व डॉ. दिनेश शर्मा एवं माननीय मंत्री प्राविधिक शिक्षा श्री आशुतोष टण्डन जी।

इन्दिरा गांधी प्रतिष्ठान में प्राविधिक शिक्षा के बढ़ते कदम के अन्तर्गत विभिन्न तकनीकी विद्यालयों द्वारा लगायी नवाचार प्रदर्शनी में एस.एम.एस. के विद्यार्थियों द्वारा तैयार किये गये प्रोजेक्ट का दिनांक 08 अगस्त 2017 को निरीक्षण करते हुए माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्य नाथ, उप मुख्यमंत्रीद्वय श्री केशव प्रसाद मौर्या व डॉ. दिनेश शर्मा एवं माननीय मंत्री प्राविधिक शिक्षा श्री आशुतोष टण्डन जी।

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय में सातवें दीक्षांत समारोह के अवसर पर एस.एम.एस. के विद्यार्थियों व महानिदेशक प्रो. भरत राज सिंह के नवीनतम अविष्कारों का दिनांक 15 दिसम्बर 2017 को निरीक्षण करते हुए महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी, माननीय राज्यपाल श्री राम नाईक जी एवं माननीय मंत्री प्राविधिक शिक्षा श्री आशुतोष टण्डन जी।

इन्दिरा गांधी प्रतिष्ठान में प्राविधिक शिक्षा के बढ़ते कदम के अन्तर्गत विभिन्न तकनीकी विद्यालयों द्वारा लगायी नवाचार प्रदर्शनी में एस.एम.एस. के विद्यार्थियों द्वारा तैयार किये गये प्रोजेक्ट का दिनांक 08 अगस्त 2017 को निरीक्षण करते हुए माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्य नाथ, उप मुख्यमंत्रीद्वय श्री केशव प्रसाद मौर्या व डॉ. दिनेश शर्मा एवं माननीय मंत्री प्राविधिक शिक्षा श्री आशुतोष टण्डन जी।

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय में सातवें दीक्षांत समारोह के अवसर पर एस.एम.एस. के विद्यार्थियों व महानिदेशक प्रो. भरत राज सिंह के नवीनतम अविष्कारों का दिनांक 15 दिसम्बर 2017 को निरीक्षण करते हुए महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी, माननीय राज्यपाल श्री राम नाईक जी एवं माननीय मंत्री प्राविधिक शिक्षा श्री आशुतोष टण्डन जी।

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय में सातवें दीक्षांत समारोह के अवसर पर एस.एम.एस. के
विद्यार्थियों व महानिदेशक प्रो. भरत राज सिंह के नवीनतम अविष्कारों का दिनांक 15 दिसम्बर 2017 को निरीक्षण करते हुए
महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी, माननीय राज्यपाल श्री राम नाईक जी एवं माननीय मंत्री प्राविधिक शिक्षा श्री आशुतोष टण्डन जी।

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय में सातवें दीक्षांत समारोह के अवसर पर एस.एम.एस. के
विद्यार्थियों व महानिदेशक प्रो. भरत राज सिंह के नवीनतम अविष्कारों का दिनांक 15 दिसम्बर 2017 को निरीक्षण करते हुए
महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी, माननीय राज्यपाल श्री राम नाईक जी एवं माननीय मंत्री प्राविधिक शिक्षा श्री आशुतोष टण्डन जी।